भगवान श्री सेवा संस्थान द्वारा आयोजित भगवान श्री श्री राम प्रसाद जी महाराज की पुण्य तिथि के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

भगवान श्री श्री राम प्रसाद जी महाराज की पुण्य तिथि के अवसर पर यहाँ उपस्थित सभी आगंतुक महानुभावों को सादर वंदन।

श्री राम प्रसाद जी महाराज की सूक्ष्म उपस्थिति को भी मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

जब किसी के भाग्य का उदय होता है तो उसका जन्म भारत की पवित्र भूमि पर होता है, क्योंकि भारत की भूमि कोई सामान्य भूमि नहीं है। यह धर्म की भूमि है। अध्यात्म की भूमि है।

संस्कृति व संस्कार की भूमि है, जहां अनेक देवी-देवताओं और साधु संतों ने जन्म लिया है। इसीलिए यह भारत शाश्वत है। संतों के बताए रास्ते पर चलकर ही सामाजिक बुराईयों से छुटकारा पाया जा सकता है।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि मनुष्य जन्म में सबसे दुर्लभ संतों का सत्संग है। अगर संतों की अनुभूति हो गई तो ईश्वर की अनुभूति अपने आप हो जाती है और आज इस पवित्र तीर्थ-भूमि पर आकर मुझे ऐसी ही अनुभूति हो रही है।

उत्तर भारत के शिरोमणि संतों में जिनके नाम का स्मरण अत्यंत अपार श्रद्धा, निष्ठा, समर्पणा के साथ किया जाता है,जो भक्तों के हृदय में सदा वास करते हों, ऐसे महामुनि, जैन आगमों के ज्ञाता, समाधान प्रस्तुति में सिद्धहस्त, ऐसी अद्भुत स्मरणशक्ति को धारण करने वाले गुरुदेव के श्रीचरणों में यदि कोई श्रद्धालु लम्बे अर्से के बाद भी उनके दर्शन को आता था तो उसे नाम से बुलाकर, उसे अपनेपन का एहसास दिलाने वाले गुरुदेव श्री राम प्रसाद जी महाराज की 16वीं पावन पुण्य तिथि के अवसर पर, उनका गुणगान करने हेतु मुझे भी शामिल होने का सौभाग्य मिला है।

जिसके लिए मैं आज के कार्यक्रम के आयोजक श्री रमेश जी जैन 'शामड़ी', पूर्व निगम पार्षद श्रीमती कनिका संदीप जी जैन एवं अन्य महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

सावन का पवित्र माह भी चल रहा हैं,ओर इस बार बड़ा अद्भुत संयोग भी हैं कि अधिकमास, जिसे हम पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं। ऐसा पावन महीना भी चल रहा है। और जैन धर्म में तो चातुर्मास का अपना एक अलग महत्व हैं।

सनातन उत्सव भारतीय साहित्य और भक्ति से जुड़ा एक संपूर्ण भारतीय विकल्प है। भारतीयता से ओतप्रोत ऋतु पर्व चातुर्मास में संस्कृति के रंगों संग प्रकृति की छटाओं का भी समावेश है। यह पूरे चार महीने चलने वाला सबसे लंबा सनातन उत्सव है।

पुरातन काल में जहां संत लोग पुस्तकों की अनेक हस्तलिखित प्रतियां बनाते थे, वहीं बदलते समय ने अब लेखन और अनुवाद के लिए कहीं अधिक समय उपलब्ध कराया है। वाल्मीकि रामायण में भगवान राम इसे सामवेदीय साधकों का अध्ययन काल कहते हैं। जबकि पुराण ग्रंथ इसे देवताओं के स्मरणार्थ प्रस्तुतियों के लिए उपयुक्त समय मानते हैं। वास्तव में यह गीत, काव्य रचना संग नृत्य नाट्य और संगीत के अभ्यास हेतु उपयुक्त समय है।

महाकवि कालिदास का दूतकाव्य मेघदूतम वर्षा के इसी ऋतु के ऊपर रचा गया है। पुरातन पर्व चातुर्मास उत्सव सभी भारतीय मत पंथों में समान रूप से लोकप्रिय है। जैन बौद्ध साहित्यों में भगवान बुद्ध एवं तीर्थंकर महावीर के चातुर्मास उत्सवों का पूरा वर्णन है।

श्री रामचरित मानस में तुलसीदास जी भी कहा गया है “बिनु हरि कृपा मिलहिं नहीं संता” भक्ति व सत्संग का मौका प्रभु की मर्जी से ही मिलता है।

भाग्यशाली व्यक्ति ही सत्संग में शामिल होते हैं। प्रभु की इच्छा के बिना आप सत्संग में शामिल नहीं हो सकते हैं। ठीक वैसे ही जैसे भोजन में आप जिसे बुलाएंगे, वही व्यक्ति या रिश्तेदार आपके घर पहुंचता है। आपकी इच्छा के बिना कोई कदम नहीं रखता है। भगवान की ही इच्छा हैं तभी आपको और मुझे सत्संग का मौका मिला है।

सत्संग तो वह चीज है जो मनुष्य को भगवान के सान्निध्य में ले जाता है। कोई मनुष्य दूर से भी सत्संग का तमाशा ही मात्र देख ले तो उसका बेड़ा पार हो जाता है।

ठीक वैसे ही जैसे बाग में फूल कोई और लगाता है, लेकिन सुगंध उस मालिक के साथ राह से गुजरने वाले सभी व्यक्तियों को अनुभव होती है।

आज हम एक ऐसे महामुनि का गुणानुवाद कर रहे हैं, जो सच्चे अर्थों में एक निराभिमानी संत थे। सन् 1952 में राजस्थान के सादड़ी क्षेत्र में स्थापित स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के गठन में उनकी सक्रिय भूमिका रही। ओर आज यह चिरस्मरणीय है।

दर्शन शास्त्र - धर्म शास्त्र - विज्ञान शास्त्र के आप पारगामी विद्वान थे, वहीं आपके अंतस में कण-मात्र भी अभिमान नहीं था। दीन-हीन के मसीहा कहलाने वाले गुरुदेव को उनके विलक्षण गुणों के ही कारण उनके भक्त उन्हें अपार श्रद्धाओं के साथ आज भी “भगवन् श्री” कहकर सम्बोधित किया करते हैं।

जहां तक मैं, समझ सकता हूँ, ऐसे अविरल गुणों के धारक गुरुदेव श्री जी का जीवन कैसा रहा होगा।

मुझे यह भी जानकर आश्चर्य और हर्ष हो रहा है कि आपका पूरा परिवार ही जैन संत बना था, आपका स्थान किसी साधारण संत जैसा नहीं अपितु महान संतों की श्रेणी में शुमार होता है। आपके पिताश्री जी, जो श्रद्धेय श्री बद्रीप्रसाद जी महाराज के नाम से विख्यात हुए, उनकी 72 दिवसीय संथारा तप साधना, आज एक इतिहास का पहलू है। आपके बड़े भाई, जिन्हें उनके श्रद्धालु भक्त बड़े ही आदर के साथ “सेठ जी” महाराज कह कर सम्बोधित करते हैं।

इनके गुणों के बारे में जानकर मेरे मन में भी गोहाना (हरियाणा) में विराजमान परम श्रद्धेय श्री प्रकाशचन्द 'सेठ जी' महाराज के दर्शन करने का भाव है, मैं अपनी जिम्मेदारियों में से समय निकालकर उनके दर्शन करने की भावना व्यक्त करता हूँ।

श्रद्धेय भगवन् श्री श्री रामप्रसाद जी महाराज जैन शास्त्रों के जहां आधिकारिक विद्वान थे, वहीं उनके लिए " वर्तमान के वर्धमान” जैसा सम्बोधन भी अतिश्योक्ति पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

उनके जैसा महान संत जो वास्तव में कथनी और करनी के पर्याय थे और उनका श्रमण (संत) जीवन विनयशील बना रहा।

जैन धर्म में वर्णित 32 आगम या शास्त्र आपको पूरी तरह से कंठस्थ थे और जिज्ञासु श्रद्धालुओं की जिज्ञासाओं का आपश्री जी उस शास्त्र की गाथा संख्या आदि बताकर तुरन्त समाधान प्रस्तुत कर दिया करते थे।

एक ऐसे संत, जिनके जीवन का गुणानुवाद जितना भी करें, उतना ही कम है, मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि उनके जीवन वृत्त पर जहां कई पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है वहीं उनके जीवन को अभी भी शायद पूरी तरह से कहा नहीं जा सका है।

उनका कवि हृदय, यहां मैं बीच में एक बात और कहना चाहूँगा कि जब एक संत कविताओं की रचना करता है, तो सही मायनों में वह मानव जीवन की गहराईयों को जहां नाप लेता है, वहीं ऐसा संत वास्तव में सरल हृदयी होता है।

आपके गुणों की लिस्ट बहुत बड़ी है और हमारा व्यक्तित्व आपके समक्ष बौना है, फिर भी आपके श्रीचरणों में, आपकी पावन स्मृति में अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का प्रयास किया है। उनके जीवन की वैसे तो जितनी चाहे व्याख्या की जाए, वह हमेशा अधूरी रहेगी, क्योंकि उनका व्यक्तित्व था ही इतना विराट। लाखों भक्तों के तारणहार गुरुदेव का नाम स्मरण आज भी उतना ही प्रभावशाली है जितना आज से 16 वर्ष पूर्व तक बना हुआ था।

मेरे हृदय में भी गुरु भगवंतों के प्रति गहरी निष्ठा है, प्रगाढ़ श्रद्धा है, मैं जिस राजस्थान की मिट्टी का प्रतिनिधित्व करता हूँ, वह धरा जहां वीरों का सम्मान करती है, वहीं वह संतों के सम्मान में भी पीछे नहीं है।

व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी महाराज सा., संघशास्ता गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी महाराज, श्री बद्रीप्रसाद जी महाराज के परिवार की कुल परम्परा को आपश्री जी ने उच्चस्थ एवं सफल बनाया है।

आज का यह आयोजन पूज्य गुरुदेव भगवन् श्री श्री रामप्रसाद जी महाराज के प्रति कविता व संगीत के माध्यम से अर्पित करने का है।

आज के इस आयोजन के लिए आज के आयोजकों को एक बार फिर से मेरी अनंत शुभकामनाएं एवं पूज्य गुरुदेव के चरणों में शत-शत वंदन।